

सुनो मातु पंथ की बतियां सुहाई ।

लाल लखण ने कैसे प्रीति निबाही ॥

भयंकर बनों की गहिबर थी गलियां

रिछों ओर सिंहो की ठौर ठौर थलियां

रवि की न रोशनी अन्धेरी थी छाई ॥

पथिरीले मार्ग भरे कंटको से

कोई ना उबारे उन संकटों से

जननी जनक न संग न सखा सहाई ॥

नन्हा नारायण सौमित्र प्यारा

ऐसे समय में बिना मेरा सहारा

पल पल सम्भारा पलक नैन न्याई ॥

बड़े बड़े वृक्षों से लपटी लताएं

गिरि शिखरों को घेरे मेंघ मालाएं

झरणनि के नाद ने नौबत बजाई ॥

मोर चकोर कीर कोकिलि पुकारे

बंदी जनों सम भौरै गुंजारे

चन्दन तरु वरनि सौं रहे सर्प लपटाई ॥

तेरे विछोह में था मनु चिन्तातुर

बीहड़ बनों में मुझको हुआ डर

जतनों से भ्राता तब दिलि बहिलाई ॥

संत हृदय सम स्वच्छ जल सरोवर
बालों सहित मृग राज रिछ केहर
क्रीड़ा करत तहां जल पी अघाई ॥

कमल पतों से जल छिप रहा ऐसा
माया के पर्दे में छिपा बृह्म जैसा
सुखी हरीजन ज्यों मीन जल माहीं ॥

पूछा मातु अहिल्या की कहो कथा सारी
पति वंचिका कैसे पद रज तारी
परम पावन करि रिषी सों मिलाई ॥

कहा रघुवर जै जननि प्यारी
अहिल्या आश्रम मार्ग भयानक भारी
वहां भी लखण कीनी बहुत भलाई ॥

पांच योजन भूमी रेति से भरी थी
वृक्ष छाया बिनु तपती बड़ी थी
ग्रीष्म सूर्य किरनि तीर ज्यों चुभाई ॥

कांगो के विकल रव चहूं ओर आते
पथिक हृदयों में विरह जगाते
दुर्गम मार्ग चलि बड़े विकलाई ॥

श्रम कण छाए मस्तक मेरे
प्यास से सूखें अधर घनेरे
हुआ मैं अचेत नैननि नीर बहाई ॥

पाहन क्रम जिमि कठिन रिषीश्वर
कहते चलते धन धन जगदीश्वर
दौड़ि दूरि सों जल लाए भाई ॥

करील की छाया मुझको लाकर
जल छिड़िकिया मुख पै गोदी सुलाकर
वसन व्यंजन कर आतप मिटाई ॥

होकर सचेत पुनः चले बन में
अमां बाबा से दूरि निर्माही मुनियुनि में
छोड़ि इच्छा रहे मुनि अनुपाई ॥

जुगों के पुराने बट पीपल पाकर
भूत प्रेत नाचै मुंढियां बजाकर
लखण धनुष सब विपति नशाई ॥

कठिन कालों में रहे सौमित्र साथी
नहीं तो राघव की कथा रह जाती
कहिते रिषी के संग गया रघुराई ॥

माता पिता बंधु शिष्य मेरा लक्ष्मण
पुत्र प्यारा प्रभू तन मन जीवन
बुद्धि बल सर्वशु सुहृद सुखदाई ॥

पेखन में एक पै अनेक रूप धारे
सर्व प्रकार मेरी सेवा संवारे
छोटी सी रसना मेरी बड़ी है बड़ाई ॥

चलते चलते रवि गए अस्ताचल
सामने दृष्य एक देखा धूमल
ज्वाला की लाटों से यह धुनि आई ॥

ओ राम, हे राम, लक्ष्मण राम
रोम खिड़ाने वाले सुने ऐसे नाम
लिपटे भुजाओं से मेरी लक्ष्मण डराई ॥

मुनि ने कहा देखो कोहीड़े की मूरति
तेज पुंज से भरी तपस्या की मूरति
गौतम गृहणी यह श्राप सताई ॥

दरस लालसा तेरी जीय में समानी
इन्द्र संग कालिया कलंक निमानी
सप्त सहस वर्ष आशा लगाई ॥

जग मंगल नामु दुइ अक्षर तेरो
शिव सर्वस्व सब मंत्रनि सुमेरो
जप तप जीवे नाम सुधा सरसाई ॥

सब ही जावों को जुग करने वाले
पति सों मिलाओ इसे दशरथ लाले
फल सों मिले फल संत श्रुति गाई ॥

तेरी कृपा सों जब पति से मिलेगी
तीन दिनों में यांकी आशीश फलेगी
तुम भी मिलोगे निज सखा सों सदाई ॥

अहिल्या के समीप गए सुनि मुनि बानी
देखि रही राह मेरी जोड़े जुग पानी
आइ पड़ी चरणों में मस्तक झुकाई ॥

पति के वचन करि स्मर्ण मन में
फूल चन्दन लै लगी पूजन में
दुंदभी देव जै धुनि मचाई ॥

हमारा आगमन रिषि गौतम जाना
जल्दी से आए चढ़ि वायु विमाना
पावनु पत्नी निज हृदय सों लाई ॥

पारजात पुष्प मेरे चरणों पर चढ़ाए
हर्षित हो दम्पति स्तुति गाए
निरखि श्री खण्डि की भई मन भाई ॥